जर्मनी में 'चाइना टाइम' की तरह लोकप्रिय हो रहा 'इंडिया वीक'

सांस्कृतिक विविधता और आर्थिक संभावनाओं से कराता है परिचित

हरिकिशन शर्मा, हैम्बर्ग (जर्मनी)

जर्मनी में मनाया जाने वाला 'इंडिया वीक' भी 'चाइना टाइम' की तरह तेजी से लोकप्रिय हो रहा है। भारत की सांस्कृतिक विविधता और उभरती आर्थिक ताकत की झलक दिखाने वाले सप्ताह भर के इस कार्यक्रम का आयोजन जर्मनी के राज्य हैम्बर्ग की सरकार करती है। इस बार इंडिया वीक का आयोजन दिवाली से ठीक पहले दो से आठ नवंबर के बीच होगा।

हैम्बर्ग के मेयर ओलोफ सोल्जब का कहना है कि भारत का इस शहर से काफी पुराना रिश्ता रहा है इसलिए हम भारत की सांस्कृतिक विविधता और आर्थिक संभावनाओं से स्थानीय लोगों को रूबरू कराने के लिए यह आयोजन करते हैं। इंडिया वीक की शुरुआत 2007 में छोटे स्तर पर हुई थी, लेकिन साल दर साल इसका आयोजन बड़ा होता जा रहा है। 2013 में इंडिया वीक में 40 से अधिक कार्यक्रम आयोजित हुए और करीब बीस हजार लोग शामिल हुए। हैम्बर्ग में भारत के काउंसिल जनरल विभु पी नायर ने

◆ इस बार दो से आठ नवंबर तक होगा आयोजन

दैनिक जागरण से कहा कि इस बार छठा इंडिया वीक होगा और इसमें करीब 70 कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे। इंडिया वीक की तरह ही हैम्बर्ग की सरकार 'चाइना टाइम' का आयोजन करती है जो अब तक यहां काफी लोकप्रिय रहा है। इसमें करीब 200 कार्यक्रम होते हैं। यहां करीब साढ़े तीन हजार भारतीय और दस हजार से अधिक चीनी मूल के लोग रहते हैं। टेक्नोलॉजी यूनिवर्सिटी हैम्बर्ग-हारबर्ग में सीनियर रिसर्च फेलो डॉ.रजनीश तिवारी का कहना है कि एशिया की दो उभरती आर्थिक शक्तियों की सांस्कृतिक विविधता और आर्थिक ताकत को पेश करने का हैम्बर्ग का यह तरीका वाकई निराला है। भारत में जर्मनी की लगभग 500 कंपनियां कारोबार करती हैं, जबकि चीन में यह संख्या 1800 से अधिक है। इस तथ्य के बावजूद यहां की सरकार चाइना टाइम की तरह ही पूरे जोर शोर से इंडिया वीक का आयोजन करती है। हैम्बर्ग विश्वविद्यालय में हिंदी के लेक्चरर डॉ. राम प्रसाद भट्ट कहते हैं कि इंडिया वीक के आयोजन से यहां की युवा पीढ़ी को भी भारत के समाज और संस्कृति को समझने का मौका मिलता है।

पुराना रिश्ता

भारत का हैम्बर्ग से बहुत पुराना रिश्ता रहा है। बहुत कम लोगों को यह मालूम है कि भारतीय राष्ट्रगान 'जन गण मन' आजादी से पूर्व सितंबर 1942 में हैम्बर्ग के अटलांटिक होटल में गाया गया था। उस समय इंडो-जर्मन सोसाइटी ने इसका आयोजन किया था।